14

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

आपने एक पूर्व पाठ में प्रकृति की सुंदरता के बारे में पढ़ा। यह सच है कि स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और हरा-भरा वातावरण हमारे दिल-दिमाग को तरोताज़ा कर देता है। सुंदर प्राकृतिक दृश्य हमारे मन को खुशी से भर देते हैं। लेकिन आज स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और सुंदर प्राकृतिक दृश्य कम होते जा रहे हैं। जानते हैं क्यों? क्योंकि मनुष्य इनका उपयोग बड़ी बेहरहमी से कर रहा है। क्या पेड़ों को काटे जाने पर उनके रोने की आवाज़ आपने सुनी है? चौंक गए न? पर चौंकिए मत, आज प्रकृति अपने संरक्षण के लिए हमें पुकार रही है। इस पुकार को हमें भी उसी तरह सुनना चाहिए जैसे एक कवयित्री ने इस कविता में सुना है, आइए इसे पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- मानव-जीवन में प्रकृति की भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे;
- प्रकृति के प्रति मनुष्य के कर्तव्य का वर्णन कर सकेंगे;
- सामाजिक तथा सृजनात्मक चिंतन के लिए संवदेनशीलता तथा समानुभूति का महत्त्व समझा सकेंगे;
- पर्यावरण-संरक्षण में अपनी भूमिका निर्धारित कर सकेंगे;
- उपभोक्तावाद की हानियों की व्याख्या कर सकेंगे;
- प्रकृति के मानवीकरण की सराहना कर सकेंगे;
- कविता के काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे।

14.1 मूल पाठ

आइए, इस कविता को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं।

क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ?

क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?

कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक, कोई पत्थर?

सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख़?

ख़ून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने घर के पिछवाड़े?

थोड़ा-सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?

अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!

-निर्मला पुतुल

शब्दार्थ

चीत्कार	=	कष्ट या पीड़ा में चिल्लाने की आवाज़
धमस	=	चोट, आघात (किसी आघात की गूँज)
किस कदर	=	कितना अधिक
घाट	=	नदी किनारे का वह स्थान, जहाँ लोग नहाते-धोते हैं
मवेशी	=	पालतू पशु
अर्घ्य	=	जल या दूध आदि देवता को अर्पित करना
समाधि	=	ध्यान की मुद्रा
गुमसुम	=	चुपचाप, विचारों में खोई, स्तब्ध

14.2 आइए समझें

यह तो आप जानते ही हैं कि सभी प्राणियों में मनुष्य ही ऐसा है, जिसमें बुद्धि, विवेक और कल्पना-शक्ति है। इसीलिए, वह दूसरों में अपनी तरह प्राण देखता है, जड़-चेतन में दुख-सुख की कल्पना करके, उनके दुख को अपना मानकर उसे दूर करने का उपाय करता है। 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' एक ऐसी कविता है, जिसमें पेड़, नदी, पहाड़, हवा और पृथ्वी को मनुष्य के रूप में चित्रित किया गया है। साहित्य की भाषा में इसे 'मानवीकरण' कहते हैं, अर्थात् जो मानव नहीं है, जड़ है- कल्पना-शक्ति से उसे मानव जैसा व्यवहार करते दिखाना। आप एक अन्य कविता पढ़ रहे है:- 'बीती विभावरी जाग री!' उस कविता में प्राकृतिक सौंदर्य के विषय में बताने के लिए मानवीकरण किया गया है। इसी तरह, 'चंद्रगहना से लौटती बेर' में विवाह-समारोह के दृश्य के रूप में प्रकृति का चित्रण है। लेकिन, 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में मानवीकरण सौंदर्य-वर्णन के लिए नहीं किया गया है। इसमें प्रकृति तथा पृथ्वी के दुख का अहसास कराने के लिए मानवीकरण किया गया है।

चित्र 14.1

पेड़, नदी, पहाड़ और हवा हमसे अलग नहीं हैं, हमारे साथी हैं। हम इन पर निर्भर हैं। इनके बिना हमारा होना ही ख़तरे में है। इसलिए इनका दुख हमारा दुख है। आप जानते ही हैं कि पेड़, नदी, पहाड़, हवा आदि को मिलाकर पर्यावरण बनता है। 'पर्यावरण' शब्द 'परि' और 'आवरण' से बना है, जिसका अर्थ है- हमारे आस-पास की प्राकृतिक स्थिति। पर्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है। अपनी संतुलित ज़िंदगी के लिए मनुष्य पेड़-पौधों, जल, वायु, जीव-जंतुओं, पर्वत आदि पर निर्भर है, फिर भी ज़्यादा-से-ज़्यादा सुविधाओं के भोग के लालच में वह इनका अंधाधुंध दोहन अर्थात् अनावश्यक उपयोग करता आ रहा है। ऐसा करके वह प्राकृतिक आपदाओं, जैसे- बाढ़, भूकंप, सूखा आदि को न्योता देता है।

ऐसा नहीं है कि सभी लोग प्रकृति का दोहन ही कर रहे हैं। हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो प्रकृति के कष्ट को महसूस करते हैं। वे सही अर्थों में मनुष्य हैं। आपने जो कविता

टिप्पणी

अभी पढ़ी, उसमें प्रकृति के कष्टों और उसके भय का चित्रण किया गया है। आवश्यकता है कि इस कष्ट और भय को हम सभी महसूस कर सकें।

आइए, अब हम कविता की आरंभिक नौ पंक्तियों का भाव समझने के लिए इन्हें एक बार फिर से पढ़ लें।

14.2.1 अंश-1

कवयित्री कल्पना करती है कि मनुष्य की तरह पेड़ भी भयभीत होते हैं। वे भय से चीख़ते-चिल्लाते भी हैं। वे भी बचाव के लिए पुकारते हैं। जैसे हम भयानक सपने देखते हैं, तो डर से चिल्ला पड़ते हैं, वैसे ही पेड़ों को भी सपने आते हैं। वे सपने बड़े भयानक हैं। उनके सपनों में चमकती हुई कुल्हाड़ियाँ पेड़ों को काटने के लिए तत्पर हैं और पेड़ इन कुल्हाड़ियों के डर से चीख़ रहे हैं। कविता की इन पंक्तियों में कुछ प्रश्न पूछे गए हैं। कवयित्री पेड़ों के पक्ष में ये सवाल पूछ रही है। उसके सवाल उस 'सभ्य समाज' से है, जो पेड़ों के साथ नहीं जीता, बल्कि पेड़ों को अपने उपयोग के लिए नष्ट करता है। ये प्रश्न हम सबसे भी किए गए हैं।

क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ?

क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

कविता में इस दृश्य की कल्पना की गई है, लेकिन वास्तविकता में यह केवल कल्पना नहीं, बल्कि सच है। इन पंक्तियों में एक बहुत बड़ी चिंता व्यक्त की गई है। वह चिंता है- घटते हुए वृक्ष, घटती हुई हरियाली और मानव-जीवन पर इसका विनाशकारी प्रभाव। सोचिए कि इस स्थिति का ज़िम्मेदार कौन है? इसके ज़िम्मेदार हम सभी हैं। हमें भय से चीत्कार करते पेड़ों के कष्ट से कोई सरोकार नहीं। हम बस अपने स्वार्थ में अंधे हैं। भविष्य और दूसरों की चिंता किए बिना चीज़ों को ज़्यादा-से-ज़्यादा भोग लेने की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति आजकल इन्सानों में बढ़ती जा रही है। इस आदत का कुप्रभाव प्रकृति पर भी पड़ता है। यह प्रकृति-विरोधी रवैया पूरी तरह से स्वार्थ पर आधारित है।

सही मायने में मनुष्य वह है, जो अपने स्वार्थ को छोड़कर भय से चीख़ते पेड़ों के दुख को महसूस करे और इन्हें बचाने का प्रयास करे। इसीलिए, कवयित्री प्रश्न करती है- 'क्या तुमने कभी सुनी है, सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से पेड़ों की चीत्कार?' आप समझ गए होंगे कि यह वास्तव में प्रश्न नहीं, उत्तर भी है। कई बार हम किसी बात के आग्रह के लिए उसे प्रश्न के रूप में रखते हैं। कवयित्री का आग्रह है कि हमें भयभीत पेड़ों की चीत्कार महसूस करनी चाहिए। वैसे भी पेड़ों पर आया संकट मनुष्यता पर घिरा संकट है और इस तरह पेड़ों का भय वास्तव में मनुष्य का ही भय है। आख़िर पेड़ नहीं रहेंगे, तो मनुष्य रहेगा क्या?

कवयित्री ने पेड़ के अंगों में मानव-अंगों की कल्पना की है। कविता में की गयी कल्पना हमें दूसरों के दुख से जोड़ती है, हमें दूसरों से समानुभूति रखना सिखाती है और अधिक संवेदनशील बनाती है। यह कविता हमें प्रकृति के दुख से जोड़कर अधिक सजग और उदार मनुष्य बनाती है।

टिप्पणी

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

आपने यह महसूस किया होगा कि जब वर्षा होती है, तो पेड़ साफ़-सुथरे, हरे-भरे हो जाते हैं। जब हवा चलती है, तो पेड़ प्रसन्न होकर झूमने लगते हैं। क्या आपने पेड़ों में मनुष्य की कल्पना नहीं की? क्या कभी ऐसा नहीं हुआ कि पेड़ों की टहनियाँ आपको उनके हाथों-सी लगी हों? कवयित्री ने इन पंक्तियों में बहुत ही मार्मिक यानी मन को छू लेने वाली कल्पना की है। पेड़ कुल्हाड़ी की चोट की आशंका से भयभीत होकर बचाव के लिए पुकारने लगता है। पेड़ की काँपती हुई टहनियाँ मानो बचाव के लिए पुकारते उसके हजारों हाथ हैं। मानो वे हमारी ओर उठे हैं कि हम पेड़ को बचाएँ। कवयित्री चाहती है कि हम पेड़ों के प्रति संवदेनशील हों और उन्हें कटने से बचाएँ।

जब हमारा कोई आत्मीय छोड़कर चला जाता है तो बेहद पीड़ा होती है वैसी ही पीड़ा किसी पेड़ के कटने पर भी होनी चाहिए, क्योंकि उनपर हमारा जीवन निर्भर है, वे हमारी जीवनी शक्ति हैं। उनमें भी जीवन होता है। अतएव किसी पेड़ के कटकर धरती पर गिरने पर उसकी आवाज़ उसी तरह ठेस पहुँचाएगी, मानो हमारा ही कोई हिस्सा कटकर गिर गया हो। धरती पर मज़बूती से खड़ा, हवा के स्पर्श से झूमता हुआ पेड़ कितना अच्छा लगता है! लेकिन, वही पेड़ जब धरती पर गिर जाए, तो हमें कितना आघात पहुँचाता है। क्या हम सभी के लिए इस चोट को महसूस करना ज़रूरी नहीं है?

यह भी जानिए

प्रकृति का आवश्यकता से अधिक उपभोग करने वालों और प्रकृति को हानि पहुँचाने वालों के विरोध का लंबा इतिहास हमारे देश में रहा है। आइए, इससे संबंधित कुछ बातें जानें :

'चिपको आंदोलन' का नाम तो आपने सुना ही होगा। क्या आप जानते हैं कि यह आंदोलन हिमालय पर स्थित गढ़वाल क्षेत्र के चमोली ज़िले के एक गाँव रैंणी से शुरू हुआ था। इस गाँव की एक साधारण-सी दिखने वाली महिला गौरा देवी ने वनों के महत्त्व और प्रकृति की पीड़ा को समझ लिया था। ठेकेदार के आदमी नीलाम हुए 2451 पेड़ों को काटने आए थे। गौरा देवी ने उनसे कहा कि यह जंगल और ये पेड़ हमारे देवता हैं। इन पर हमारा जीवन आश्रित है, इसलिए हम इन्हें नहीं काटने देंगे। यह कहकर गौरा देवी और उनकी सहेलियाँ पेड़ों से चिपककर खड़ी हो गईं। यही चिपकना 'चिपको आंदोलन' बन गया। इस आंदोलन का नारा है-

क्या हैं जंगल के उपकार– मिट्टी, पानी और बयार।
मिट्टी, पानी और बयार– ज़िंदा रहने के आधार॥

सन् 1987 में इस आंदोलन को 'सम्यक जीविका पुरस्कार' (Right Livelihood Award) प्रदान किया गया।

'चिपको आंदोलन' को लोकप्रिय बनाने के लिए सुंदरलाल बहुगुणा विश्व-भर में 'वृक्षमित्र' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

क्रियाकलाप-14.1

वृक्षों को बचाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के विषय में आपने पढ़ा। अपने आस-पास पेड़ों के साथ किए जा रहे व्यवहार को ध्यान से देखिए। इसके बाद पेड़ों की रक्षा के लिए कम-से-कम तीन ऐसे उपाय लिखिए, जिन्हें आप अपनाना चाहेंगे:

उपाय-1 :.....

.....

उपाय-2 :.....

.....

उपाय-3 :.....

.....

14.2.2 अंश-2

आइए, अब 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता का दूसरा अंश फिर से पढ़ें। यह अंश किसके दुख को व्यक्त करता है? जी हाँ, हमारी धरती की जीवन-रेखा अर्थात् नदियों के दुख को। जिस तरह पेड़ अपने फल दूसरों को दे देते हैं, वैसे ही नदियाँ भी अपना जल दूसरों को सौंप देती हैं। वे अपने जल के रूप में हमें जीवन देती हैं, पर हम उन्हें ही बरबाद कर रहे हैं। आपने देखा होगा कि बड़े-बड़े कारखानों का गंदा पानी नदियों में गिराया जाता है। कूड़ा भी नदियों में डाल दिया जाता है। श्रद्धा तथा धर्म के नाम पर लोग नदियों में ऐसी चीज़ें बहाते हैं, जिनसे नदियाँ गंदगी से भर जाती हैं। प्रतिबंध के बाद भी साबुन लगाकर नहाते हैं। जो नदियाँ कभी स्वच्छ पानी को लेकर कल-कल करती बहती थीं, आज वे गंदे नाले बनकर रह गई हैं। कवयित्री इसी बात से दुखी है।

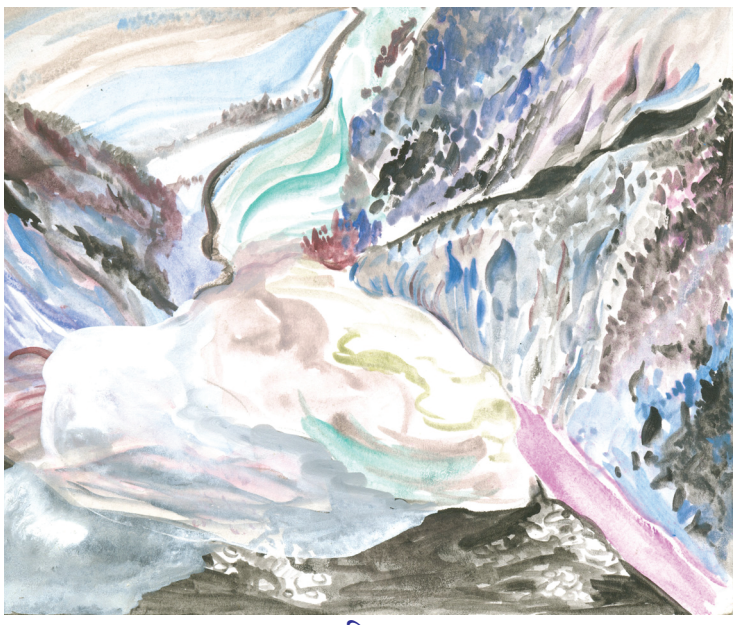

चित्र 14.2

वह हम सबसे पूछती

टिप्पणी

पेड़ों के लाभ-

- ऑक्सीज़न के बड़े स्रोत होते हैं।
- वर्षा में ज़मीन की उपजाऊ परत को कटने से बचाते हैं।
- भू-जल के स्तर बनाए रखने में सहायक होते हैं।
- जल-चक्र के नियमन में सहायक होते हैं।
- फूल फल देते हैं।
- जैव-विविधता बनाए रखते हैं।
- छाया और ठंडक देते हैं।
- जड़ी-बूटियों, दवाइयों के स्रोत होते हैं।
- वातावरण को धूल, प्रदूषण आदि से बचाते हैं।
- इनकी सूखकर गिरी टहनियाँ ईंधन के रूप में काम आती हैं।
- धरती का सौंदर्य बढ़ाते हैं।

टिप्पणी

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता
को अर्घ्य?

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

है 'सुना है कभी रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप किस कदर रोती हैं नदियाँ?' ऐसा लगता है कि कवयित्री ने नदी का रोना सुना है। नदी के साथ वह खुद भी रोती है। जिनका जीवन नदियों, पेड़ों और वनस्पतियों पर सीधे-सीधे निर्भर है, वे इनकी दुर्दशा पर दु:खी होते हैं। कवयित्री उसी दुख का बोध शहरी लोगों और शिक्षित नागरिकों को कराना चाहती है। यहाँ पर पेड़ की तरह नदी का भी मानवीकरण किया गया है। मनुष्य जब किसी गहरी पीड़ा से ग्रस्त होता है और उसके दुख को समझने वाला कोई नहीं होता, तो वह एकांत में सिसक-सिसक कर रोता है। नदी भी ऐसा ही करती है। वह मुँह ढाँपकर रोती है। नदी भी तो आंतरिक रूप से पीड़ित है। उसकी पीड़ा यह है कि वह हमें जीवन देने के लिए अपना जल हमें दे देती है और हम हैं कि उसे नष्ट कर रहे हैं। यहाँ पर नदियों के घटते पानी, उनमें बढ़ते प्रदूषण को लेकर दुख प्रकट किया है।

कविता के इस अंश में नदी के दो किनारों का चित्रण किया गया है। एक किनारा वह है, जहाँ पर कोई स्वार्थी व्यक्ति अपने मवेशी अर्थात् आजीविका के लिए पाले जाने वाले पशुओं को नहला रहा है और कोई साबुन से अपने मैले कपड़े धो रहा है और इस प्रकार वे दोनों नदी के जल को गंदा कर रहे हैं। दूसरे किनारे पर कोई प्यासा पानी पी रहा है और कोई स्त्री किसी देवता को अर्घ्य दे रही है अर्थात् देवता को जल चढ़ाकर पूजा कर रही है। आप जानते ही हैं कि पीने के लिए साफ़ पानी की ज़रूरत है। देवता को चढ़ाए जाने वाला जल भी स्वच्छ एवं पवित्र होना चाहिए। किंतु, ऐसा प्रदूषित जल पीना हानिकारक होगा और भला देवता को भी गंदा जल कैसे चढ़ाया जा सकता है? इसलिए पानी को प्रदूषित करने वाले लोगों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि नदियों अथवा पानी के साथ उनके द्वारा किए गए व्यवहार से दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। कवयित्री ऐसे लोगों से प्रश्न पूछकर उन्हें पानी के साथ किए गए व्यवहार के लिए शर्मिंदा करना चाहती है।

यह कविता हमें कई बातों पर सोचने के लिए प्रेरित करती है। कभी-कभी हम ऐसी चीज़ों का दुरुपयोग करते हैं, जिन पर दूसरों का भी अधिकार है। क्या आप जानते हैं कि हमें सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि एक के अधिकारों के साथ दूसरों के भी अधिकार जुड़े होते हैं। इसलिए अधिकार कुछ कर्तव्यों की भी माँग करते हैं। इस बात को आप 'आज़ादी' नामक कविता में भी पढ़ रहे हैं। उसमें आज़ादी का वास्तविक अर्थ समझाया गया है।

आप समझ गए न कि जो चीज़ें हमें प्रकृति ने दी हैं, उन पर केवल हमारा ही अधिकार नहीं है, आने वाली पीढ़ियों का भी है। हो सके, तो प्रकृति द्वारा दी गई संपत्ति में बढ़ोत्तरी ही करनी चाहिए। इससे आने वाली पीढ़ियाँ हमें याद करके खुश होंगी और वे भी प्रकृति के साथ वही व्यवहार करेंगी।

कविता के इस अंश के माध्यम से कवयित्री हमें अपने कर्त्तव्यों की याद दिलाती है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम नदियों को साफ़ रखें, उन्हें सूखने से बचाएँ, जल के अन्य स्रोतों,

टिप्पणी

जैसे–तालाब, झील, कुएँ आदि को बढ़ावा दें, ताकि नदियों पर निर्भरता थोड़ी कम हो सके और उनमें पानी बना रहे। हम जब भी पानी का उपयोग करें, तो यह याद रखें कि इसकी ज़रूरत औरों को भी है। संसार की बहुत बड़ी आबादी प्रदूषित पानी का उपयोग करने के लिए विवश है। विश्व में प्रतिदिन लगभग पच्चीस हज़ार लोग पानी से होने वाले रोगों से मर जाते हैं।

पाठगत प्रश्न-14.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मानवीकरण का अर्थ है–

   (क) जो मानव नहीं, उसे मानव के रूप में कल्पित करना ☐

   (ख) दूसरों के सुख-दुख को अपना सुख-दुख मानना ☐

   (ग) पेड़, पहाड़, नदी आदि के प्रति चिंता प्रकट करना ☐

   (घ) सच्चा मनुष्य बनने की क्रिया ☐

2. पर्यावरण का अर्थ है-

   (क) मनुष्य के लिए अनिवार्य आस-पास की प्राकृतिक स्थिति ☐

   (ख) प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे- भूकंप, बाढ़, सूखा आदि ☐

   (ग) वृक्षों, नदियों, पहाड़ों को मनुष्य के रूप में चित्रित करना ☐

   (घ) प्रकृति को सूक्ष्मता के साथ देखने की क्षमता ☐

3. कविता में पेड़ों के हज़ारों हज़ार हाथों के हिलने से अभिप्राय है–

   (क) खुशी से झूम उठना ☐ (ग) तूफ़ान से काँपना ☐

   (ख) रक्षा की गुहार लगाना ☐ (घ) हवा से थिरकना ☐

4. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए :

   (क) 'नदियाँ मुँह ढाँपकर रोती हैं' का अर्थ है– उनकी पीड़ा को कोई समझ नहीं रहा। ☐

   (ख) 'नदियाँ मुँह ढाँपकर रोती हैं' में मानवीकरण है। ☐

   (ग) प्राकृतिक संसाधनों का मनमाना उपयोग हमारा अधिकार है। ☐

   (घ) 'सोचा है कभी कि उस घाट...' प्रश्न के द्वारा कवयित्री घाट की सराहना करना चाहती है। ☐